सं. ग्रो.वि./सोनीपत/163-84/24638.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० सूरज स्टील इण्डस्ट्रीज लिं० इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, (सोनीपत) के श्रमिक श्री जय भगवान तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धार। 10 की उपवार। (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिन्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिधसूचना सं 3864-ए.एस.श्रो (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनयम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करत हैं जो कि उक्त प्रवन्वकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जय भगवान की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, नी वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./ग्राई.डो./सोनीपत/166-84/24645.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, की शय है कि मैं सूरज स्टील इण्डस्ट्रीज लि॰ इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, (सोनीपत) के श्रमिक श्री विशनु देव शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीग्रोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, भव, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कित्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम 70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोह्तक, को विवादअस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादअस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:----

क्या श्री विशतु देव अर्मा की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्रो० वि./सोनीपत/165-84/24666.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सूरज स्टील इण्डस्ट्री ज लि० इण्डस्ट्रीयल ऐरिया सोनीपत, के श्रीमिक श्रो हरेन्द्र कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इतिलए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत तथा उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री हरेन्द्र कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 20 जुलाई, 1984

सं श्रो.वि./सोनी./163-84/25362. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मैं मैंनेजिंग डायरैकटर दी सोनीपत सैन्ट्रल को. श्रो. बैंक लि. सीनीपत के श्रीमक श्री राममेहर सिंह तथा उसके प्रवस्थकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीबोगिक विवाद है:

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीधोगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा त्रवान की गई त्रक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना चं० 9641-1-श्रव-70/325 , दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रधिसूचना सं० 3864-ए.एस.श्रो. (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रधिनिय की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनगैय हेतू विविध्य करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उन्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री राममेहर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठी र है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकवार है ?

सं. भी.वि./जी.जी.एन./62-84/25369.—-चूं कि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० मुखसन इन्जी० क०, महरोली रोड़, गुडगांवा, के श्रमिक श्री रोशन लाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित सामले में कोई भौधोगिक विवाद है;

श्रीर चंकि हरियाण। के राज्यपाल विवाद को न्यायिनणय हेतु निविष्ट करना बाछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीचोगिक विवाद श्रविनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रविस्चना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ते हुए ग्रविस्चना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रविनियम की घारा 7 के ग्रवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादपस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिषय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादपस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री रोशन लाल की सेवाघों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रौ.वि./गुडगांवा/69-84/25376.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० सी. ई. श्रो. साहिवं मिलक यूनियन नारनील के श्रमिक श्री सन्त लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट शरना वांछनीय समझते हैं :

इसलिए, श्रव, श्रीचोगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई न्यानितयों का श्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं० 5415—3—श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिष्ठसूचना सं० 11495—जी. श्रम—57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त बिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीबाबाद, को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला म्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सन्त लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा अक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्री वि. | गुडगांवा | 72-84 | 25383 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं कि स्पैशल स्टील फोर्राजिगस प्राव्ति गुड़गांवा, के श्रीमिक श्री वी. एस तिबाडी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौधोगिक विवाद है;

भौर वृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायितर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रन, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रद्धितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिन्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियागा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जुन, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधित्यम की धारा 7 के ग्रद्धीन गठित श्रम न्यायालय, परीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला श्र्यायनिणय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भ्रमण सम्बन्धित मामला है:—

नया भी बी. एस. तिवाड़ी की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीस है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

एस० के० महेश्वरी, संयुक्त सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।